

## मूसा<sup>(अ.स)</sup> की ज़िन्दगी

तौरत : हिजरत 2:1-25

एक इब्रानी आदमी जो लावी के खानदान से था, उसने फैसला किया कि वो अपने ही खानदान की एक लड़की से शादी करेगा।<sup>(1)</sup> वो औरत हामिला हुई और एक लड़के को पैदा किया।<sup>(2)</sup> माँ ने अपने खूबसूरत बच्चे को तीन महीने तक छुपा कर रखा। तीन महीनों के बाद उन्होंने एक डलिया बनाई और उसके ऊपर तारकोल लगाया ताकि वो पानी पर तैर सके। तब उन्होंने उस बच्चे को डलिया में लिटा दिया। उन्होंने उस डलिया को नील नदी में उस जगह तैरा दिया जहाँ बहुत लम्बी सरकंडे उगी हुई थीं।<sup>(3)</sup> उस बच्चे की बड़ी बहन वहीं पर रुकी ताकि वो देख सके कि बच्चे के साथ क्या होता है।<sup>(4)</sup>

उसी जगह पर फिरौन की बेटी नहाने के लिए आई और उसने नदी के किनारे, सरकंडों में, उस डलिया को देखा। उसके साथ आई हुई गुलाम लड़कियाँ नदी के किनारे चल ही रही थीं, तो उसने उनमें से एक गुलाम से कहा, “जाओ और डलिया मेरे पास ले कर आओ।”<sup>(5)</sup> फिरौन की बेटी ने डलिया को खोला तो उसमें एक बच्चा देखा, उसको बहुत बुरा लगा क्योंकि वो बच्चा रो रहा था। उसने कहा, “ये एक इब्रानी बच्चा है।”<sup>(6)</sup> उस बच्चे की बहन आगे आई और पूछा, “क्या आप चाहती हैं कि मैं एक इब्रानी औरत को ढूँढ कर लाऊँ, जो इस बच्चे को दूध पिला सके और इस बच्चे की परवरिश करने में आपकी मदद कर सके।”<sup>(7)</sup> फिरौन की बेटी ने कहा, “हाँ जाओ।” तो वो लड़की गई और बच्चे की माँ को बुला लाई।<sup>(8)</sup> फिरौन की बेटी ने कहा, “इस बच्चे को दूध पिलाओ, मैं इसकी देखभाल के लिए तुमको पैसे दूँगी।” उस औरत ने बच्चे को लिया और उसकी परवरिश करी।<sup>(9)</sup>

जब बच्चा बड़ा हुआ तो वो औरत उस बच्चे को फिरौन की बेटी के पास ले गई और उसने उस बच्चे को अपना बेटा बना लिया। उसने उस बच्चे का नाम मूसा<sup>(अ.स)</sup> रखा क्योंकि उसने उस को पानी से बाहर निकाला था।<sup>(10)</sup>

मूसा<sup>(अ.स)</sup> बड़े हुए और एक नौजवान आदमी बन गए। वो वहाँ गए जहाँ उनके अपने लोग काम करते थे और उन्होंने देखा कि उनसे बहुत बेदर्री से सख्त काम करवाया जा रहा था। एक दिन उन्होंने देखा कि एक मिस्री आदमी एक इब्रानी को पीट रहा था।<sup>(11)</sup> मूसा<sup>(अ.स)</sup> ने उस इब्रानी आदमी को बचाने के लिए उस मिस्री पर हमला किया और वो मर गया। तब मूसा<sup>(अ.स)</sup> ने उसकी लाश को रेत में दफन कर दिया।<sup>(12)</sup> दूसरे दिन उन्होंने दो इब्रानी आदमियों को लड़ते हुए देखा। उन्होंने उस आदमी से पूछा, जिसकी गलती थी, “तुम अपने इब्रानी भाई को क्यों मार रहे हो?”<sup>(13)</sup> उस आदमी ने जवाब दिया, “तुमको किसने हमारा मालिक और काज़ी बनाया है? मुझे बताओ कि क्या तुम मुझे भी ऐसे ही मार दोगे जैसे तुमने उस मिस्री को मारा था?” मूसा<sup>(अ.स)</sup> ये बात सुन कर डर गए कि इस बारे में हर एक को पता चल गया है।<sup>(14)</sup> जब फिरौन को ये बात पता चली तो उसने मूसा<sup>(अ.स)</sup> को मौत की सज़ा देने का फैसला किया।

मूसा<sup>(अ.स)</sup> वहाँ से भाग कर दूसरे मुल्क, मिदियान, में चले गए। वहाँ जा कर वो एक कुएं पर बैठ गए।<sup>(15)</sup> उस जगह पर एक मज़हबी रहनुमा रहते थे जिनका नाम जनाब रुएल था जिनकी सात लड़कियाँ थीं। वो लड़कियाँ उस कुएं पर अपनी भेड़ों के लिए पानी भरने आईं,<sup>(16)</sup> लेकिन वहाँ पर कुछ चरवाहे आए और लड़कियों को परेशान करने लगे। मूसा<sup>(अ.स)</sup> ने उन लड़कियों को बचाया और उनके जानवरों को पानी भी दिया।<sup>(17)</sup> जब वो अपने वालिद के पास वापस लौटीं तो उन्होंने अपनी बेटियों से पूछा, “आज तुम लोग बहुत जल्दी लौट आईं?”<sup>(18)</sup> उन लड़कियों ने जवाब दिया, “चरवाहों ने आज हमें परेशान किया, लेकिन एक मिस्री आदमी ने हमें बचाया और हमारे जानवरों को पानी भी दिया।”<sup>(19)</sup> जनाब रुएल ने अपनी बेटियों से पूछा, “वो आदमी कहाँ है? तुमने उसको वहाँ क्यों छोड़ दिया? जाओ और उस आदमी को दावत पर बुलाओ।”<sup>(20)</sup>

मूसा<sup>(अ.स)</sup> ने उनकी दावत को कुबूल किया और उनके साथ रहने के लिए राजी हो गए। जनाब रुएल ने अपनी बेटी सपफोरा की शादी मूसा<sup>(अ.स)</sup> से कर दी।<sup>(21)</sup> सपफोरा हामिला हुई और उन्होंने एक बच्चे को पैदा किया। मूसा<sup>(अ.स)</sup> ने उस बच्चे का नाम जेरसूम रखा, क्योंकि मूसा<sup>(अ.स)</sup> एक ग़ैर-मुल्क में अजनबी की तरह थे।<sup>(22)</sup>

एक लम्बा वक़्त गुज़रा और मिस्र का बादशाह, फिरौन, मर गया। इब्रानी लोग अभी भी गुलाम ही थे और बहुत जुल्म सहते थे। उन लोगों ने अल्लाह ताअला से क़ैद से छुटकारे के लिए फ़रियाद की।<sup>(23)</sup> अल्लाह ताअला ने उनकी दर्द भरी आहें सुनी और अपना अहद याद किया जो उसने इब्राहीम<sup>(अ.स)</sup>, इस्हाक<sup>(अ.स)</sup>, और याक़ूब<sup>(अ.स)</sup> से किया था।<sup>(24)</sup> अल्लाह ताअला ने इब्रानियों की परेशानियों को देखा और वो इनसे बेख़बर नहीं था।<sup>(25)</sup>